ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 41-43**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

हिन्दी गद्य के विकास में इंशा अल्ला खाँ का योगदान

डॉ0 बिपिन प्रसाद

सहायक आचार्य, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0) भारत

Received-03.09.2025, Revised-10.09.2025, Accepted-17.09.2025 **E-mail :bkanaujiya9@gmail.com**

सारांशः ***उन्नीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध खड़ी बोली हिन्दी गद्य के लिए विशेष स्थान रखता है। वहीं उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध खड़ी बोली हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों के लिए विशेष महत्व रखता है। प्रारम्भिक खड़ी बोली हिन्दी की यह स्थिति एकाएक उन्नीसवीं सदी में नहीं पनपी। इसके विकास की एक लम्बी सीढ़ी है। इसी सीढ़ी के द्वारा खड़ी बोली हिन्दी इस मुकाम पर पहुँची है। खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास में स्वतंत्र पुस्तक के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज के लल्लूलाल एवं सदल मिश्र ख्याति प्राप्त है। इस फोर्ट विलियम कॉलेज से अलग रहकर जिन दो लेखकों ने हिन्दी गद्य में रचनाएं की उनमें इंशा अल्ला खाँ एवं सदासुखलाल 'नियाज' महत्वपूर्ण हैं।***

हिन्दी साहित्य में अनेकानेक कवि एवं लेखकों का जीवन परिचय एवं रचनाएं विवादों से घिरी हुई है। यह स्थिति आरम्भिक काल में अत्यधिक है। जिसका समाधान अनुमान से किया जाता है। इसका कारण कागज और प्रेस की अनुपलब्धता को माना जा सकता है। इसी दिशा में हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक लेखकों में इंशा अल्ला खाँ का नाम लिया जाता है। इंशा अल्ला खाँ ने ब्रिटिश सरकार के संस्थानों से बाहर रहकर खड़ी बोली हिन्दी में रचनाएं की। इंशा अल्ला खां के जन्म दिवस को लेकर इतिहास में एकरूपता नहीं है। हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास–ग्रन्थों में इनके जन्म का उल्लेख नहीं मिलता है। जीवन परिचय के समान ही इंशा अल्ला खां की रचनाओं के समय पर भी विवाद देखने को मिलता है।

कुंजीभूत शब्द– खड़ीबोली, आत्माभिमानी, मौलिकता, कहानी, अवलोकन, हिन्दू– परिवार, मुहावरेदार, हास्यपूर्ण, प्रेमाख्यान।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भाषा एवं साहित्य के विकास की कहानी इंशा अल्ला खां की रचनाओं से ही गुजरती है। यह समस्या तब और गम्भीर हो जाती है, जब खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास की चर्चा की जाती है। हिन्दी साहित्य में दो इतिहास–ग्रन्थों के कारण प्रसिद्धि पाये बच्चन सिंह ने इंशा अल्ला खां का उल्लेख निम्न प्रकार से किया है, '"उदय भान चरित या रानी केतकी की कहानी' लिखकर इंशा अल्ला खां (1756–1817) ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया। वे लल्लू जी लाल और सदल मिश्र के समकालीन थे। 'रानी केतकी की कहानी' 1800 और 1808 के बीच लिखी गयी होगी।"[1] हिन्दी गद्य के विकास पर बहुधा विद्वानों के द्वारा, अनेक गद्य लेखकों का जीवन वृत दिया गया है, लेकिन इंशा अल्ला खां के जीवन पर पर्दा–सा दिखता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में इंशा अल्ला खां की जन्म तारीख का उल्लेख नहीं किया है, जिससे शुक्ल के बाद बहुतायत इतिहासकारों में उन्हीं की नकल दिखती हैं।

इंशा अल्ला खां के मृत्यु समय में भी दोनों विद्वानों के विचारों में एक साल का अन्तर दिखाई देता है। आचार्य शुक्ल ने इंशा अल्ला खां की मृत्यु संवत् 1875 बताया है, जो ई. सन् में 1818 ठहरता है। वहीं बच्चन सिंह ने इंशा की मृत्यु 1817 ई. स्वीकार किया है। आचार्य शुक्ल, इंशा अल्ला खां की मृत्यु पर लिखते हैं, "बहुत दिनों तक इनकी बड़ी प्रतिष्ठा रही, पर अन्त में एक दिल्लगी की बात पर इनका वेतन आदि सब बन्द हो गया था और इनके जीवन का अन्तिम भाग बड़े कष्ट में बीता। संवत् 1875 में इनकी मृत्यु हुई।"[2] इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इनका अन्तिम समय कष्टों में न बीता हो। इंशा की मृत्यु और अन्तिम समय की एक और प्रामाणिक जानकारी हमें प्राप्त होती। हिन्दी साहित्य कोश भाग–2, नामवाची शब्दावली में उल्लेख है, "पहले तो नवाब से इनकी खूब पटी, किन्तु बाद को इनके एक अभद्र मजाक पर नवाब साहब बिगड़ गये और इन्हें दरबार से अलग होना पड़ा। इनके जीवन के अन्तिम वर्ष कठिनाइयों में व्यतीत हुए। सन् 1817 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।"[3] इस प्रकार इंशा की मृत्यु समय को समझना चाहिए।

इंशा अल्ला खां के जन्म और मृत्यु की उहापोह से निकलकर अब हम उनके व्यक्तित्व एवं समसामयिक परिस्थितियों को समझने का प्रयास करेंगे। इन परिस्थितियों से हम इंशा अल्ला खां के खड़ी बोली हिन्दी के विकास क्रम में उनके योगदान को समझ सकेंगे। इंशा अल्ला खां के पिता बंगाल के मुर्शिदाबाद में रहते थे। उनका नाम मीर माशा अल्ला खां था। वे मुर्शिदाबाद रहने से पहले दिल्ली दरबार में रहते थे। मीर माशा अल्ला खां दिल्ली दरबार से पहले काश्मीर में रहते थे। माशा अल्ला खां जब बंगाल के मुर्शिदाबाद में रहते थे उसी दौरान इंशा अल्ला खां का जन्म हुआ था। मुर्शिदाबाद में माशा अल्ला खां बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के दरबार में रहते थे। माशा अल्ला खां दरबार के हकीम थे। इंशा अल्ला खां इसी दरबार में रहकर पढ़े–लिखे और प्रतिभाशाली हो गये। इंशा कवि एवं शायर भी हो गये। इस प्रकार समय के बदलने के साथ–साथ इंशा का स्थान भी परिवर्तित होता रहा। जब बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया और वे मारे गए, तो बंगाल में इंशा अल्ला खां का रहना मुकिश्ल हो गया। इस कठिन परिस्थिति में इंशा बंगाल से दिल्ली चले आये एवं शाह आलम द्वितीय के दरबार में रहने लगे। इंशा जब इन परिस्थितियों से रुबरु हो रहे थे तब उनकी उम्र 25 वर्ष की थी।

इंशा अल्ला खां की प्रतिभा से खुश शाह आलम द्वितीय ने बहुत सम्मान दिया। लेकिन कुछ ही समय पश्चात् दिल्ली में गुलाम कादिर ने शाह आलम का सम्पूर्ण खजाना लूट लिया और उसे कंगाल बना दिया। शाह आलम द्वितीय का खजाना लूटे जाने पर वह अपने ही कष्टों से जूझने लगा। इंशा अल्ला खां को अपनी शायरी एवं प्रतिभा पर विश्वास था। उन्होंने दिल्ली की आर्थिक परिस्थिति को भांपकर वहाँ रहना उचित नहीं समझा एवं लखनऊ दरबार का गुणगान सुन लखनऊ चले आये। इंशा अल्ला खां 1798 ई. से सआदत अली खां के दरबार में जाने लगे इनकी प्रतिभा से राजा बहुत प्रभावित था। यह प्रभाव दरबार के अन्य विरोधियों को देखा नहीं गया। वे इंशा के विरुद्ध नवाब के कान भरने लगे।

इंशा का सम्मान दरबार के अन्य विरोधियों से नहीं देखा गया। इंशा स्वभाव से चंचल और तीव्र बुद्धि के थे। वे बहुत खुश–मिजाज व्यक्ति थे। इनके व्यक्तित्व का प्रभाव इनके साहित्य पर दिखता है। विरोधियों का कान भरना नवाब को रास आया। जिसके कारण नवाब एवं इंशा के बीच मन मुटाव हुआ और इंशा अन्तिम समय में नवाब से अलग हो गये। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने इंशा

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

के अन्तिम समय को इस प्रकार व्यक्त किया है, ''कुछ काल व्यतीत होने पर एक दिन हँसी–हँसी में नवाब में और इनमें मनमुटाव हो गया। आत्माभिमानी तो थे ही, ये दरबार छोड़कर एकांत वास करने लगे। सात वर्ष के एकांत वास के पश्चात् सन् 1816 में वे स्वर्ग सिधारे।''[4] प्रतिभावान एवं आत्माभिमानी व्यक्ति किसी से, किसी प्रकार का निःशुल्क सेवा नहीं लेता। वह अपनी जिन्दगी जीने के लिए किसी नवाब के सामने आर्थिक मदद की भीख भी नहीं मांगता। यही मनोवृत्ति इंशा अल्ला खां में भी थी। नवाब से अलग होने के बाद इंशा ने एकांतवास करना पसन्द किया। लेकिन नवाब से किसी प्रकार की सहायता नहीं मांगी। इसी कारण इंशा की जिन्दगी का पूर्वार्द्ध संघर्ष में तथा अन्तिम समय आर्थिक कष्टों में व्यतीत हुआ।

फोर्ट विलियम कॉलेज से बाहर रहकर जिन दो लेखकों ने खड़ी बोली हिन्दी के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया, उसमें इंशा अल्ला खां का नाम महत्वपूर्ण है। दूसरा नाम सदासुखलाल 'नियाज' का है। इंशा अल्ला खां का विशेष उल्लेख हिन्दी साहित्य में 'रानी केतकी की कहानी' के लिए किया जाता है। इंशा ने 'रानी केतकी की कहानी' को खड़ी बोली हिन्दी में लिखा है। इनकी ये रचना अनूदित नहीं है। यह इंशा की मौलिक रचना है जो उनके व्यक्तित्व को भी उजागर करती है। 'रानी केतकी की कहानी' के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, ''इंशा ने 'उदयभान चरित' या 'रानी केतकी की कहानी' संवत् 1855 और 1860 के बीच लिखी होगी।''[5] 'रानी केतकी की कहानी' को डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय एवं डॉ. बच्चन सिंह 1800 ई. से 1808 ई. के बीच माना है, वहीं आचार्य शुक्ल ने सन् 1798 से 1803 ई. के बीच माना है। इंशा अल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' के समय के सम्बन्ध में कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है, इसलिए असमंजस की स्थिति पैदा हुई है। प्रेमनारायण टंडन, इंशा के शहादत अली खां के लखनऊ दरबार में जाने के बाद की रचना (रानी केतकी की कहानी) मानते हैं।

'रानी केतकी की कहानी' की रचना और इंशा अल्ला खां के समकालीन खड़ी बोली हिन्दी के रचनाकारों के सन्दर्भ में लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का कथन है, ''खड़ी बोली गद्य के इतिहास में इंशा का विशिष्ट स्थान है। इंशा ने 'उदयभान चरित' या 'रानी केतकी की कहानी' 1800 और 1808 के बीच में लिखी होगी। उन्होंने अपने ग्रन्थ में रचना काल नहीं दिया। वे लल्लूलाल एवं सदल मिश्र के समकालीन अवश्य थे, परन्तु अपने ग्रन्थ की रचना वे संभवतः उन दोनों से पहले कर चुके थे।''[6] इस प्रकार अनेक ग्रन्थों का अवलोकन करने के पश्चात् 'रानी केतकी की कहानी' सम्भवतः 1800 ई. से 1804–05 ई. के बीच की प्रतीत होती है। इंशा अल्ला खां ने बाल्यकाल से ही फारसी भाषा में शिक्षा ग्रहण किया था। इंशा अल्ला खां खड़ी बोली हिन्दी के साथ–साथ उर्दू और फारसी के भी ज्ञाता हो गये थे। उनकी फारसी में लिखी पुस्तक 'दरिया–ए–'लतायफ' बहुत प्रसिद्ध है। इंशा उर्दू के लोकप्रिय कवि एवं शायर थे।

इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' को बाबू श्यामसुन्दर दास जैसे आलोचक हिन्दी की पहली कहानी मानते हैं तो कुछ इसे पुरानी शैली की अन्तिम कहानी कहते हैं। 'रानी केतकी की कहानी' की ख्याति इतनी अधिक है कि इसे हिन्दी की प्रथम लघुकथा अथवा लघु उपन्यास भी कहा जाता हैं। इंशा अल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' को स्वान्तः सुखाय लिया था। इसलिए इस कहानी में उन्होंने अपने मन की उड़ान को जगह देने की पूरी कोशिश की है। इंशा अल्ला खां ने बिना किसी तात्कालिक उद्देश्य से प्रेरित होकर 'रानी केतकी की कहानी' की रचना की है। इंशा जिस प्रकार की आध्यात्मिक कहानी गढ़ते हैं उसका उस समाज या राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था। इसलिए कहा जाता है कि इंशा ने अपने मस्त–मिजाज को अपनी कहानी में उतार दिया है। इंशा का समय नवाबों के राज्य अधिग्रहण करने और अंग्रेजों से लड़ने का था। इंशा अल्ला खां चाहते तो नवाबों की प्रशंसा में कहानी कह सकते थे लेकिन उन्होंने किसी की तरफदारी नहीं की।

इंशा अल्ला खां ने मुस्लिम होते हुए भी हिन्दू राज–परिवारों की कथा को अपना विषय बनाया। वे 'रानी केतकी की कहानी' लखनऊ में रहकर लिख रहे थे। उनके सम्पूर्ण पात्र हिन्दू परिवार के पात्र हैं। इंशा के पहले इस प्रकार के हिन्दू पात्र पद्य में मुस्लिम कवियों के यहाँ मिलते हैं। इनके गद्य का कथानक भी मुस्लिम कवियों के जैसा लौकिक श्रृंगार परक है। इनके समकालीन अन्य लेखकों में धार्मिकता, परम्परागत अनुभव का प्रभाव था। लेकिन इंशा की गद्य रचना 'रानी केतकी की कहानी' में पहली बार लौकिक श्रृंगारमय प्रेम का वर्णन मिलता है। यही वर्णन अन्य लेखकों से इंशा को अलग करता है। इंशा ने अपनी रचना में किसी की भी धार्मिक भावना के प्रचारार्थ कोई भी उद्देश्य प्रेषित नहीं किया। इंशा के पूर्व के सूफी कवियों में प्रेम तो है लेकिन उस प्रेम में धर्म का प्रचार भी समाहित है।

'रानी केतकी की कहानी' की पूरी कथा दो राज–परिवारों की कथा है। इसमें पात्रों की संख्या सीमित है। पाठक को यह कहानी पढ़ते हुए बहुत उलझन नहीं होती है। कहानी बहुत छोटी–सी है। एक तरफ राजा सूरजभान, रानी लक्ष्मीबास एवं पुत्र उदयभान का परिवार है तो दूसरी तरफ राजा जगत प्रकाश, रानी कामलता एवं पुत्री रानी केतकी का परिवार है। वहीं कथा के बीच में रानी केतकी का साथ देने सखी मदनबान आती है। मदनबान, रानी केतकी का साथ देती है, लेकिन पूर्णता तक नहीं पहुँचा पाती। रानी केतकी को स्वयं ही अपने प्रेमी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कहानी के बीच में ही युद्ध के दौरान साधु और महेन्द्र गिरि नामक पात्र आते हैं। ये पात्र आध्यात्मिक कर्म करते हैं, जो हास्यास्पद है। इस कहानी का अन्त सुखान्त होता है। इसमें रानी केतकी अपनी बुद्धि और चालबाजी से कुंवर उदयभान से शादी कर लेती है। इस कहानी में लौकिक श्रृंगार, आध्यात्मिकता, दोस्ती, अन्धविश्वास, युद्ध और संवेदना को लेखक ने बहुत बारीकी से उद्घाटित किया है। इस संदर्भ में कथा का विस्तृत विवेचन करने की बजाए 'रानी केतकी की कहानी' की भाषा और शैली पर विचार करना ही अपेक्षित जान पड़ता है।

इंशा अल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' को प्रारम्भ करते हुए उल्लेख करते हैं, ''एक दिन बैठे–बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिससे हिंदवी छूट और किसी बोली का पूट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गंवारी कुछ उसके बीच में न हो... सिर हिलाकर, मुंह शुथाकर नाक भौं चढ़ाकर, आंखे फिराकर लगे कहने यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिन्दीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो।''[7] इस प्रकार कहानी के आरंभ में ही इंशा अपनी भाषा नीति को स्पष्ट कर देना चाहते हैं। इंशा की कथनी के अनुसार उनकी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द नहीं आने चाहिए थे लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। हाँ, इतना अवश्य है कि उनका खड़ी बोली हिन्दी में लिखने का मकसद पूरा हुआ है। इंशा अल्ला खाँ की लेखनी में आये हुए 'बाहर की बोली' से आशय अरबी, फारसी और तुर्की आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों से लिया जाता है। इंशा साहब ने इसी 'बाहरी बोली' के शब्दों को अपनी रचनाओं में छूट दी है। इंशा का 'गंवारी' से आशय उस समय भारतीय भाषाओं में हो रही रचनाओं अवधी और ब्रजभाषा से है। इंशा इन दो भारतीय भाषाओं के शब्दों से भी छूट प्राप्त करना चाहते हैं। इंशा तीसरी भाषा, जिससे अलग रहना चाहते हैं, वह 'भाखापन' है, जिसका सम्बन्ध 'संस्कृत' के शब्दों से है। इंशा साहब इन भाषाओं के शब्दों से अलग होकर 'हिन्दवी' (खड़ी बोली हिन्दी) में अपनी रचना करना चाहते हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

इंशा अल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' में जिन भाषाओं के शब्दों को छोड़ना चाहते हैं वे कहीं–कहीं दिख जाते हैं। इनकी रचना में उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है, लेकिन गहराई से देखने पर वे खड़ी बोली हिन्दी के शब्द प्रतीत होते हैं। इंशा जैसे ही तीन प्रकार के बाहरी वाक्यों (बाहर की बोली, गंवारी और भाखापन) का प्रयोग करते हैं, वैसे ही उनका ध्येय घरेलू भाषा की तरफ जाता है।

इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' में फारसी शैली का वाक्य विन्यास देखने को मिलता है। जिससे उनके खड़ी बोली हिन्दी के विश्वास पर अस्त व्यस्तता दिखती है। पर ऐसे वाक्य विन्यास बहुत कम दिखते हैं। 'रानी केतकी की कहानी' से ही वाक्य उल्लेखित है, "सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनाने वाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात–ही–बात में कह दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियां जातियां जो सांसे हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फांसे हैं।"[8] इंशा की भाषा में कूंद–फांद, लपट–झपट और ताव–भाव अत्यधिक मात्रा में है। संस्कृत, गंवारी, अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग अल्पमात्रा में मिलता है। इनकी रचना में घरेलू तद्भव शब्द की मात्रा पायी जाती है।

'रानी केतकी की कहानी' में कविताओं की तरह तुकान्त और अनुप्रास का भी प्रयोग मिलता है। इंशा ने कहावतों और मुहावरों का प्रयोग भी बहुत सुन्दर एवं सटीक ढंग से किया है। ये कहावतें और मुहावरे खड़ी बोली हिन्दी के हैं। इनकी रचना में उंगलियां नचाना, राई को पर्वत कर दिखाना, चौकड़ी भूल जाना, बेसिर की बातें बनाना, दहना हाथ मुँह फेरना इत्यादि मुहावरों और कहावतों का प्रयोग मिलता है। इस प्रकार का प्रयोग इंशा साहब के समकालीनों में कम देखने को मिलता है। चन्द्रदेव कवड़े ने इंशा अल्ला खां के मुहावरों पर लिखा है, "अपने भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने मुहावरों का प्रयोग किया है। इससे इंशा के गद्य में सजीवता ही नहीं आई वरन् एक प्रकार का रंगीलापन आ गया है। जैसा मुहँ वैसा थप्पड़, छाती के किवाड़ खुलना, हिचर–मिचर न रहे, आठ–आठ आंसू रोना, कुछ दाल में काला है, भर–भर झोली सिर निहुराना, सिर मुड़ाते ही ओले पड़े इत्यादि मुहावरों के सुन्दर प्रयोग है।"[9] इस प्रकार यह देखा जाता है कि इंशा साहब की भाषा वास्तव में रोचक एवं सुबोध है, जिसे कोई भी पाठक आसानी से समझ सके।

इंशा अल्ला खां ने मुसलमान एवं नवाबों के सम्पर्क में रहते हुए भी खड़ी बोली हिन्दी के लिए जो साहस दिखाया उसके लिए हिन्दी साहित्य सदा ऋणी रहेगा। इंशा अल्ला खां की शैली में रंगीलापन फूट–फूट कर भरा पड़ा है। 'रानी केतकी की कहानी' की मौलिकता एवं अक्खड़ता को देखकर यह प्रतीत होता है कि इंशा को सरकारी आश्रय मिलने पर और मौलिक रचनाएं दे सकते थे। इंशा अल्ला खां अपनी बातों को कहने के लिए रसीली उपमाओं का प्रयोग करते हैं। वे बातों को घूमाएं एवं रुपकों के प्रयोग के बिना कहना अधूरा समझते हैं। इंशा की शैली का आधुनिक प्रयोग हरिशंकर परसाई के यहाँ देखने को मिलता है। इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' से प्रभावित और उन्हीं की शैली पर हरिशंकर परसाई ने 'रानी नागफनी की कहानी' लिखी।

'रानी केतकी की कहानी' में उदयभान का प्रेम किस प्रकार, रानी केतकी को बेचैन करता है, इसका प्रमाण देखा जा सकता है। 'रानी केतकी' जब कुंवर उदयभान से रात को सहेली मदनबान के साथ मिलने जाती है, तो ऐसे वाक्य मिलता है,"अरी ओ, तूने कुछ सुना है? मेरा जी उस पर आ गया है और किसी डौल से थम नहीं सकता। तू सब मेरे भेदों को जानती है। अब होनी जो हो सो; सिर रहता रहे, जाता जाय। मैं उसके पास जाती हूँ। तू मेरे साथ चल। पर तेरे पांव पड़ती हूँ कोई सुनने न पाए।"[10] इस प्रकार के वाक्य विन्यास मिलते हैं।

इंशा अल्ला खां ने अपनी रचना में खड़ी बोली हिन्दी की जमीन तैयार की है। 'रानी केतकी की कहानी' में इंशा ने शब्दों की किसी प्रकार की कंजूसी नहीं की है। इंशा ने व्यंग्य में कुछ नहीं लिखा, लेकिन उनकी भाषा और शैली सॉफ्ट और सुन्दर है। इंशा की भाषा पर आचार्य शुक्ल का कथन है, "आरम्भ काल के चारों लेखकों में इंशा की भाषा सबसे चटकीली, मटकीली, मुहावरेदार और चलती है।"[11] 'रानी केतकी की कहानी' में हास्य रस भी देखने को मिलता है। इंशा का हास्य किसी भी राजनीतिक, धार्मिक या सामाजिक विषय पर नहीं है। इंशा अपनी किसी भी बात को तोड़–मरोड़ कर उसमें ऐसी विचित्रता ला देते हैं, जिससे हम बिना हँसे नहीं रह सकते। कहानी के प्रारम्भ में ही जब हम उन्हें, 'नाक रगड़ते' हुए ईश्वर को 'सिर झुकाने वाला' वाक्य पढ़ते हैं तो हंसे बिना नहीं रह पाते।

इस प्रकार इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की ऐसी पाठ्य–पुस्तक है, जिसने पाठकों के लिए खड़ी बोली हिन्दी सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह पाठ्य–पुस्तक खड़ी बोली हिन्दी के विकास में उल्लेखनीय योगदान देती है। 'रानी केतकी की कहानी' आज भी हिन्दी के पाठकों को रोचकता प्रदान करती है। गंगा प्रसाद विमल ने 'हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ' नामक शीर्षक से कहानियों का जो सम्पादन किया है, उसमें प्रथम कहानी 'रानी केतकी की कहानी' ही है। यह कहानी सांसारिक प्रेम पर है, जो पाठक को मनोरंजन प्रदान करती है। यह कहानी उन्नीसवीं सदी की आरम्भिक मुस्लिम लेखकीय प्रवृत्ति को चटपटी, अध्यात्म, हास्यपूर्ण एवं अपने मस्त अंदाज में जीने की कला सिखाती है।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 289.
2. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 302.
3. वर्मा, सं. धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2, नामवाची शब्दावली, पृ. 42.
4. वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, साहित्य–चिन्तन, पृ. 76.
5. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 302.
6. वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. 271.
7. विमल, सं. गंगा प्रसाद, हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ, रानी केतकी की कहानी, पृ. 01.
8. विमल, सं. गंगा प्रसाद, हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ, रानी केतकी की कहानी, पृ. 01.
9. कवड़े, चन्द्रदेव, भारतेन्दु पूर्व गद्य–साहित्य, पृ. 172.
10. विमल, सं. गंगा प्रसाद, हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ, रानी केतकी की कहानी, पृ. 04.
11. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 303.

*****